

भाजपा ने द्रौपदी मुर्मू संग साधे सभी समीकरण



राहुल शर्मा

प्रधानमंत्री मोदी ने भाजपा के लिए महिला वोटरों का जो बड़ा वर्ग तैयार किया है, उसके लिए भी आदिवासी समुदाय की मुर्मू को राष्ट्रपति बनाने का दांव सही संदेश देने में सफल होगा।

राष्ट्रपति पद के लिए भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन यानी राजग और विपक्षी खंभे ने अपने-अपने प्रत्याशियों का एलान कर दिया। जहां सत्तारूढ़ पक्ष ने बहुत ही रणनीतिक रूप से द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति भवन भेजने को लेकर पहल की, वहीं विपक्ष की दिमार साझा उम्मीदवार उत्तरने की रणनीति धरी की धरी रह गई। शरद पवार जैसे कदावर नेता द्वारा राष्ट्रपति पद का प्रत्याशी बनने से इन्कार करने के बाद फारूक अब्दुल्ला और गोपालकृष्ण गांधी ने भी इसके प्रति अनिच्छा जताई। इससे यही प्रतीत होता है कि विपक्ष की ओर से यह पहले ही हरी दुई लड़ाई थी और कोई भी उसमें बलिदान होने को तैयार नहीं था। जिस तरह चौथी पंसद के रूप में पूर्व केंद्रीय मंत्री वशवंत सिन्हा के नाम पर सहमति बनी, उससे वह एक मजबूरी का विकल्प ही अधिक लगते हैं।

भाजपा ने द्रौपदी मुर्मू के नाम पर मुहर लगाकर विपक्षी खंभे में और खलबली मचा दी है। अब हेमंत सोरेन जैसे जनजाति समुदाय के नेताओं के लिए बड़े धर्मसंकट और दुविधा की स्थिति उत्पन्न हो गई है। क्या वह चाहेंगे कि इतिहास उन्हें देश में पहली बार शीर्ष पद पर विराजमान होने जा रही जनजाति समुदाय की महिला की राह में बाधक बनने वाले नेता के रूप में याद करे?

केवल हेमंत सोरेन ही नहीं छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान और ऐसे ही जनजाति बहुल वाले राज्यों के विपक्षी नेताओं के समक्ष भी यह संकट उत्पन्न होगा कि वे पार्टी लाइन पर मतदान करें या फिर अपनी अस्मिता के पहलू को प्राथमिकता दें?

यह एक संयोग ही है कि इस बार रायसीना की राह में उतरे दोनों प्रत्याशियों का ज्ञारखंड से कोई न कोई संबंध है। वशवंत सिन्हा जहां अविभाजित विहार में जन्मे और ज्ञारखंड की राजनीति में सँकिय रहे, वहीं द्रौपदी मुर्मू ज्ञारखंड की राज्यपाल रह चुकी हैं। अब दोनों अपने अभियान को परवान चढ़ाएंगे। यह अभियान चाहे जिस प्रकार चलाया जाए, द्रौपदी मुर्मू का राष्ट्रपति चुना जाना एक औपचारिकता मात्र रह गया है। स्वतंत्र भारत का इतिहास रहा है कि राष्ट्रपति चुनाव में कभी भी सत्तापक्ष के उम्मीदवार को मुंह की नहीं खानी पड़ी। इस बार भी राष्ट्रपति चुनाव के लिए राजग का पलड़ा पहले से ही भारी था। निर्वाचक मंडल में करीब 49 प्रतिशत मत पहले से ही उसके पास थे। बीजू जनता दल द्वारा द्रौपदी मुर्मू के लिए समर्थन की घोषणा से आवश्यक मत भी पूरे हो गए हैं। जदयू ने भी मुर्मू का साथ देने का एलान कर दिया है। यह लगभग तय है कि आने वाले दिनों में मुर्मू के लिए समर्थन निरंतर बढ़ता जाएगा।



अवैध राजनाव

आखिर भाजपा ने तमाम संभावित नामों में से द्रौपदी मुर्मू के नाम पर ही क्यों मुहर लगाई? इस प्रश्न के उत्तर की पढ़ताल में कई पहलू स्पष्ट होते जाएंगे। इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रधानमंत्री नोरन्द्र मोदी प्रतीकों की राजनीति में महारात रखते हैं और द्रौपदी मुर्मू के चयन में भी उनकी कसीटी में यह पैमाना प्राथमिकता में रहा। मोदी सरकार पिछली बार दलित समुदाय से आने वाले राम नाथ कोविन्द को राष्ट्रपति बनाकर चुनावी दृष्टिकोण से एक बड़े वर्ग तक संदेश देने में सफल रही थी। इस बार उसने आदिवासी समुदाय को साधने का प्रयास किया। भारतीय समाज में पारंपरिक रूप से उपेक्षित रहे दलित और आदिवासी जैसे समुदाय के लोगों को इस प्रकार शीर्ष स्तर पर प्रतिनिधित्व देकर मोदी सरकार अपने 'सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास' वाले समावेशी राजनीति के नामे को वास्तविकता का रूप देने के लिए तत्पर दिखाई पड़ती है। मुर्मू का चयन भी इसी कोट्ठी के अंतर्गत किया है।

हाल-फिलहाल जिन राज्यों में

दांव सही संदेश देने में सफल होगा। द्रौपदी मुर्मू एक अत्यंत महत्वपूर्ण दौर में राष्ट्रपति का दायित्व संभालेंगी। उनका कार्यकाल 2022 से 2027 तक होगा। इस दौरान कई महत्वपूर्ण पढ़ाव आएंगे। इसी वर्ष अगस्त में आजादी के अमृत महोत्सव का महत्वाकांक्षी आयोजन होना है। फिर 2024 के आम चुनाव होने हैं और उसमें बढ़ि कोई खड़ित जनादेश आता है तो उस स्थिति में राष्ट्रपति की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होगी। इसी दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के सौ वर्ष पूरे होंग। उसी वर्ष भारत अपनी गणतंत्रता के 75 वर्ष पूरे करेगा, जिसके उपलक्ष्य में भी कई विशेष आयोजन होने स्वाभाविक हैं। इन सभी स्थितियों में भाजपा यही चाहेगी कि देश के शीर्ष संवैधानिक पद पर विराजमान व्यक्ति उसकी वैचारिकी से साम्य रखने वाला हो। भाजपा जिस प्रकार इतिहास और प्रतीकों को लेकर अपनी एक मुहिम चला रही है, उस पर वह शीर्ष स्तर से किसी प्रकार की राजनीतिक-वैचारिक असहमति या टकराव की स्थिति नहीं चाहेगी। इस टृटिकोण से मुर्मू की प्रतिबद्धता भी उनके चयन में निर्णायक बनी।

आने वाले दिनों में दोनों ही प्रत्याशी अपने-अपने पक्ष में समर्थन के लिए देश भर में दौर करते हुए दिखाई पड़ेंगे, लेकिन इस संघर्ष का नतीजा पहले से ही तय दिखता है। भाजपा न केवल जीत की राह पर है, बल्कि उसने अपने सभी समीकरण भी साधने में सफलता हासिल कर ली है। इसके विपरीत स्वयं को मजबूत दिखाने की कोशिश में जुटे विपक्ष के हाथ से एक और अवसर फिसल गया।

(लेखक सेंटर फार पालिसी रिसर्च में फेलो हैं)

response@jagran.com